हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा

डॉ. चंद्रलेखा डिसौजा

इतिहास, इतिहास लेखन परंपरा, साहित्येतिहास जैसे शब्दों के बारे में सोचते हैं तब जो पुस्तकें सामने आती हैं उनमें से एक पुस्तक है, डॉ. इशरत खाँ लिखित ''हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा।'' वैसे हमारे देश में इतिहास लेखन की परंपरा चाहे वैज्ञानिक न रही हो पर उसमें जिन तत्वों का समावेश किया गया है वे तत्व सामयिक कम और चिंतनपरक ज्यादा है । धर्म और नीति-शास्त्र के तत्व भी इसी में समाविष्ट होते दिखाई देते हैं । ज्यों-ज्यों मनुष्य ज्ञान प्राप्त करता गया, अनुसंधान के लिए नये वैज्ञानिक साधन उपलब्ध होते गये । त्यों-त्यों इतिहास ज्ञान और उसका क्षेत्र भी व्यापक होता गया। अपने अपने समय का इतिहास, अपने प्रश्नों को उठाता है और अपने समय में उसका समाधान खोजने का प्रयत्न होता रहा है ।

इतिहास के बारे में डॉ. गणपति चंद्र गुप्त ''हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास'' पुस्तक में लिखते हैं कि- ''भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में प्राय: सामयिक तत्वों की अपेक्षा चिरंतन तत्वों का अधिक महत्व मिलता रहा है, अत: यहाँ के प्राचीन इतिहासकारों ने अतीत की व्याख्या भी इस दृष्टिकोण से की - अर्थात् वे परिवर्तनशील अतीत में से भी उन प्रवृत्तियों का अनुसंधान करते रहे जो मनुष्य को स्थायी एवं अमर बनाती हैं, उन्होंने घटनाओं एवं क्रिया-कलाप्पों की व्याख्या भौतिक उपलब्धियों एवं वैयक्तिक सफलताओं की दृष्टि से न करके समष्टि-हित की दृष्टि से की । इसीलिए, महाभारतकार ने जहाँ इतिहास को एक ऐसा पूर्ववृत्त माना जिसके माध्यम से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का उपदेश दिया जा सके तो पौराणिकों ने ऋषियों एवं महापुरुषों ने चरित-गान को इतिहास के रूप में स्वीकार किया ।'' आगे उनका कहना है कि हमारे यहाँ सामयिक तत्वों की प्राय: उपेक्षा की, इसलिए काल, तिथि, सन् संवतों को महत्व नहीं दिया । हमारे यहाँ का इतिहास विज्ञान के रूप में न रहकर कला के रूप में रहा ।

डॉ. इशरतखान अपने पुस्तक में इन्हीं बातों का समर्थन करती हैं और इतिहास, साहित्येतिहास में वैज्ञानिक कसौटी को महत्वपूर्ण मानती हैं । सात अध्यायों में लिखी गई इस पुस्तक में विवेच्य विषय का महत्व, अध्ययन की आवश्यकता, साहित्येतिहास लेखन के मूल स्त्रोत, हिंदी साहित्य के प्रारंभिक इतिहास ग्रंथ, आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत हिंदी साहित्य का इतिहास, शुक्लोत्तर प्रमुख साहित्येतिहास ग्रंथ, हिंदी के अन्य साहित्येतिहास ग्रंथ तथा उपसंहार।

लेखिका ने इतिहास और राजनीति के इतिहास की भिन्नता प्रस्तुत की है । इतिहास शब्द का अर्थ स्पष्ट किया है, साहित्येतिहास का स्वरूप स्पष्ट किया है । ''साहित्येतिहास के निर्माण में युगीन-प्रवृत्तियों, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों एवं चिंतन धाराओं से संबंधित सामग्री का उपयोग अपेक्षित है । कवि अथवा साहित्यकार जिस परिवेश से होकर उभरता है और जिस लक्ष्य की ओर प्रवृत्त होता है उसका समुचित मूल्यांकन इस सामग्री के

अभाव में संभव नहीं है ।'' पूरे पुस्तक में विवरण और तथ्यों को वैज्ञानिक रूप से समझने का दृष्टिकोण अपनाया गया है जो कि इस पुस्तक की अपनी एक पहचान बनाता है ।

हिंदी के अन्य साहित्येतिहास ग्रंथ की जो तालिका बनायी गई है - पृ.56 वह इस विषय का पूरा लेखा जोखा लेती है और हिंदी में जो कार्य हुआ है उसका एक विहंगावलोकन प्राप्त कराती है . लेखिका की तटस्थ दृष्टि और वैज्ञानिक परख महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है ।

संदर्भ ग्रंथ -

-डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय - ''इतिहास और साहित्येतिहास''

- डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त - ''हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास''

प्राध्यापिका

कोंकणी विभाग

गोवा विश्वविद्यालय

वर्ष 1996 में दिवंगत साहित्यकार

1. स्वतंत्रता सेनानी कवि-नटवरलाल स्नेही (उज्जैन)
2. प्रो. श्यामचरण दुबे (दिल्ली)
3. हरिशंकर शर्मा (कानपुर)
4. डॉ. राजेंद्र राय (बस्ती)
5. डॉ. रतन चंद शर्मा (करनाल)
6. उपन्यासकार जगदीश चंद्र (जालंधर)
7. शायर नजीर बनारसी (वारणासी)
8. विष्णु कांत मालवीय (इलाहाबाद)
9. आचर्य बसंत देव (मुंबई)
10. साहित्यकार हिमांशु श्रीवास्तव (पंजाब)
11. दूरदर्शन पत्रकार, अच्युत मेनन (दिल्ली)
12. कुबेरनाथ राय (गाजीपुर)
13. कवि मोहन लाल गुप्त ''भैय्या जी बनारसी'' वाराणासी
14. कथाकार अमृत राय (इलाहाबाद)
15. काशीनाथ त्रिवेदी (इंदौर)
16. नर्मदेश्वर चर्तुवेदी (वाराणासी)
17. कवि आरसी प्रसाद सिंह (पटना)
18. सुरेश चर्तुवेदी (मथुरा)
19. लेखक न्यायविद् गोपालदास खोसला (पंजाब)
20. कवि मेघराज मुकुल (जयपुर)

संकलन-प्रा. इसपाक अली

बैंगलूर